❶

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आर्य संदेश टीवी
Arya Sandesh TV
www.AryaSandeshTV.com
आर्य समाज का 24 घण्टे चलने वाला टीवी चैनल

वर्ष 44, अंक 31 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 21 जून, 2021 से रविवार 27 जून, 2021
विक्रमी सम्वत् 2078 सृष्टि सम्वत् 1960853122
दयानन्दाब्द : 198 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

सम्पादकीय

मूक-बधिर एवं गरीब लोगों को धोखे से मुस्लिम बनाने का मामला

धर्मान्तरण की जालसाजी से देश को बड़ा खतरा

हाथ में तस्बीह मुंह के पाकिस्तान का जाप करने वाले गिरोह के दो सदस्य काजी जहांगीर आलम और मोहम्मद उमर गौतम को उत्तर प्रदेश एटीएस टीम ने गिरफ्तार किया है। गिरोह पर अब एक हजार हिन्दू लोगों को धर्मांतरण करके मुस्लिम बनाने का आरोप है। इन्हें पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आई एस आई और विदेशों से फंडिंग होती थी। एडीजी लॉ एंड ऑर्डर प्रशांत कुमार ने सोमवार को लखनऊ में प्रेस कॉन्फ्रेंस करके इसकी जानकारी दी।

हिन्दुओं के धर्मान्तरण पर आर्यसमाज की हुंकार

सुदर्शन न्यूज चैनल पर 'बिन्दास बोल' कार्यक्रम में महामन्त्री श्री विनय आर्य

दिनांक 21 जून, 2021 को सुदर्शन न्यूज टीवी चैनल पर प्रसारित कार्यक्रम में 1000 से अधिक लोगों के धर्मान्तरण मामले पर आर्यसमाज का पक्ष मजबूती से रखते हुए महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने छल कपट और धोखे से धर्मान्तरण से राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरा बताया।

जब बड़े पैमाने हुए इस धर्मांतरण की खबर आई तो समस्त मुस्लिम जगत और इनके पीछे के मीडिया संस्थान एकजुट हो गये। किसी बरेलवी, किसी देवबंदी या आपस में कट-कट कर मरने वाले शिया, सुन्नी, अहमदिया सब के सब एक सुर में बोले कि कुरान में जबरन धर्म परिवर्तन की कोई गुंजाईश नहीं है, लेकिन एक भी

......मौलाना बनने के लिए कोई तपस्या, तप या साधना तो करनी नहीं। जैसी खबर आती है कि कुछ आतंकी तैयार करते हैं, कुछ लव जिहाद को बढ़ावा देते हैं, कुछ हिंसा को उकसाते हैं तो कुछ धर्मांतरण करा रहे हैं। लेकिन सवाल ये है कि दो साधुओं की हत्या हो या मंदिर के तोड़े जाने की घटना या अब एक हजार हिन्दू समुदाय के लोगों का धर्मांतरण होना, कितने अखाड़े सामने आये? क्या स्वतंत्र सत्ता स्थापित करने वाले संतों में ब्रह्मकुमारी के लोग सामने आयेंगे? सत्यसाईं बाबा वाले, महर्षि महेश योगी, श्रीश्री रविशंकर, आनंदमार्ग के आनंदमूर्ति, राधा स्वामी सत्संग के लोग, जय गुरुदेव बाबा वाले, कल्कि वाले आचार्य प्रमोद कृष्णम सामने आयेंगे? धीरेंद्र ब्रह्मचारी बोलेगा या सुखविन्दर कौर उर्फ राधे मां आन्दोलन करेगी? सच्चिदानंद गिरि वाले, गुरमीत सिंह डेरा सच्चा सौदा वाले, निर्मल बाबा समोसा खाकर दूसरे का भाग्य बता देते है, क्या ये नहीं पता था कि एक हजार लोगों का धर्म परिवर्तन हो गया?.....

- शेष पृष्ठ 2 पर

अमर शहीद पंडित राम प्रसाद बिस्मिल जी के 125वें जयंती वर्ष का शुभारम्भ समारोह सम्पन्न

आर्यसमाज ने की शाहजहांपुर का नाम रामप्रसाद बिस्मिल नगर रखने की मांग

आर्यवीरों ने सुन्दर नाटिका के माध्यम से प्रस्तुत किया जीवन दर्शन

11 जून 2021, आर्य समाज मंदिर हनुमान रोड नई दिल्ली। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा अमर शहीद पंडित राम प्रसाद बिस्मिल की 125वीं जन्म जयंती वर्ष के शुभारंभ समारोह का आयोजन अत्यंत उमंग, उत्साह, उल्लास के वातावरण में संपन्न हुआ। इस अवसर पर डॉ सत्यपाल सिंह जी लोकसभा सांसद बागपत एवं कुलाधिपति गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार, सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, श्री विनय आर्य जी, श्री सुरेशचंद गुप्ता जी, श्री सुखबीर सिंह आर्य जी, श्री कृपाल सिंह आर्य जी, श्री अशोक गुप्ता जी, श्री वीरेश आर्य जी एवं आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के आर्यवीर उपस्थित थे। श्री सन्दीप आर्य युवा भजनोपदेशक के मधुर एवं सारगर्भित देशभक्ति के भजनों से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ, जिसमें श्री सन्दीप आर्य जी ने अपने मधुर भजनों से उपस्थित जनों में राष्ट्रप्रेम की मधुर भावना को प्रज्वलित करते हुए महर्षि दयानंद सरस्वती, आर्य समाज, पंडित राम प्रसाद बिस्मिल और अनेक अन्य महान वीर बलिदानियों की वीर गाथाओं को भजनों द्वारा प्रस्तुत किया। इस अवसर पर डॉ सत्यपाल सिंह जी ने अपने उद्गार प्रस्तुत करते हुए सभा द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए अपने संदेश में कहा कि देश की आजादी में हजारों स्वतंत्रता सेनानियों ने भीषण यातनाएं सही

- शेष पृष्ठ 6 पर

देववाणी-संस्कृत

अमरत्व की घोषणा

वेद-स्वाध्याय

मृत्योः पदं योपयन्तो यदैत द्राघींय आयुः प्रतरं दधानाः।
आप्यायमानाः प्रजया धनेन शुद्धाः पूता भवत यज्ञियासः।। -ऋ.10/18/2
ऋषिः **सङ्कुसुमो यामायनः।।** देवता-**मृत्युः।।** छन्दः **त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ- हे मनुष्यो! **यदा** = जब तुम **मृत्योः पदं योपयन्त :** = मृत्यु के पैर को ढकेलते हुए **एत** = चलोगे, तो **द्राघीय आयुः प्रतरंदधानाः** = तुम दीर्घ आयु को धारण करने वाले तथा **प्रजया धनेन आप्यायमानाः** = प्रजा और धन से परितृप्त होओगे। इसके लिए **शुद्धाः** = बाहर से **शुद्ध पूताः** = अन्दर से पवित्र और **यज्ञियासः** = यज्ञिय जीवन वाले **भवत** = हो जाओ।

विनय - संसार के प्रत्येक प्राणी पर मृत्यु ने पांव रखा हुआ है। जिस दिन उसकी इच्छा होती है उस दिन वह उस पांव को दबाकर प्राणी को कुचल डालती है, समाप्त कर देती है, पर, हे नरतनधारी मनुष्यो! तुममे वह शक्ति है जिससे कि तुम मृत्यु के उस पैर को धकेल कर अमर बन सकते हो। इस संसार में तुम मरे हुओं की तरह न रहकर, न सड़कर, अमर पुत्रों की तरह दृढ़ता से चलो; शुद्ध, पूत और यज्ञिय बन जाओ। ऐसे बनने से तुममें वह आत्मशक्ति जग जाएगी कि तुम उस मृत्यु के पैर को धकेल फेंकोगे। ठीक आहार, व्यायाम, तप आदि द्वारा शरीर को शुद्ध रखो और अन्दर सत्त्वशुद्धि, सौमनस्य आदि लाकर अन्तःकरण को पवित्र रखो; और फिर इस शरीर और मन से यज्ञिय कर्म ही करते जाओ; इससे तुम निःसन्देह अमर निकल आओगे। यह सच है कि यज्ञिय जीवन से मृत्यु मारी जाती है, तब मनुष्य की आयु सौ वर्ष तक चलने वाला यज्ञ हो जाता है, तब वह मनुष्य पूर्ण सौ वर्ष की दीर्घ= विस्तृत आयु को यज्ञरूप में धारण करता है। हम मरे हुए मनुष्य तो आयु को 'धारण' नहीं कर रहे हैं, किन्तु आयु के बोझ को जैसे-जैसे ढ़ो रहे हैं। जब शरीर को आत्मा धारे हुए होता है तो आत्मा शरीर को पूर्ण सौ वर्ष तक स्वस्थ चलने की-जीवन-यज्ञ को सौ वर्ष तक अखण्डित चलने की-आज्ञा देता है और इस जीवन में प्रजा को सृजने द्वारा तथा धन के बढ़ाने द्वारा अपनी विकास की इच्छा को परितृप्त करके यज्ञ को पूर्ण करता है। आत्मशक्ति का प्रकाश करने के लिए ही आत्मा शरीर को धारण करता है, अतः शरीर पाकर इस जगत् में कुछ-न-कुछ उपयोगी वस्तु का प्रजनन करना, सृजन (Create) करना तथा जगत् के सच्चे ऐश्वर्य को (धन को) बढ़ा जाना आवश्यक है। संसार में आई सब महान् आत्माएं इस संसार में कुछ-न-कुछ जगत्-हितकारी वस्तु का सृजन करके तथा जगत् में किसी उच्च- से-उच्च ऐश्वर्य को बढ़ाकर जाती हैं। हे मनुष्यों! उठो, मृत्युमय जीवन छोड़ो, शुद्ध, पूत तथा यज्ञिय बनो और मृत्यु के पैर को परे हटाकर अपने अमरत्व की घोषणा कर दो।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

प्रथम पृष्ठ का शेष

मौलाना मुफ्ती काजी मस्जिद मदरसे ने इनके खिलाफ फतवा जारी नहीं किया। अगर गुनाह है शरियत के अनुसार फतवे जारी करो वरना ये ढोंग बंद करो! लेकिन सब अन्दर-अन्दर खुश हैं क्योंकि दोनों मौलानाओं और उनकी टीम ने बड़ी सफाई से काम किया, एक हजार लोगों को इस्लाम में बदल दिया। यानि आपके भाई, बंधु, माताओं और बहनों की नजरों में आपको काफिर बना दिया और काफिर का अंजाम आप जानते हैं।

समस्या जो है उसे अभी स्वीकार करना पड़ेगा, क्योंकि जब एक अब्दुल की कथित दाढ़ी काटने का झूठा मामला सामने आता है तो समस्त इस्लामिक संस्थान मौलाना, मुफ्ती, काजी, इस्लामिक संगठन, मुस्लिम नेता एक आवाज में, एक सुर में इक्कठा हो जाते हैं। पर जब पालघर के गड़चिनचले गांव में दो साधुओं और उनके ड्राइवर की पीट-पीटकर निर्मम हत्या कर दी जाती है, कितने बाबा, कितने अखाड़े, कितने नागा, कितने निरंजनी सामने आये ?

आज दो मौलाना एक हजार लोगों का धर्मांतरण करते हुए पकड़े गये, ना जाने अभी और भी कितने छिपे हुए वेश में काम कर रहे है। पकड़े गये इन मौलानाओं की जमानत को ना जाने पीएफआई जैसे कितने संगठन कोर्ट में बड़े-बड़े वकील खड़े कर देंगे। जो पाकिस्तान की आई.एस.आई. पैसा लगाकर इनसे धर्मांतरण करा रही थी, "जैसा पुलिस का कहना है" तो वो आई.एस.आई. पैसा लगाकर इन्हें बाइज्जत बरी भी करा लेगी। इनके मीडिया संस्थान जैसे बीबीसी ने तुरंत पूरा आर्टिकल छापकर बता दिया कि दोनों मौलाना मासूम हैं और उत्तर प्रदेश में चुनाव को देखते हुए यह सब किया जा रहा है।

खैर, दोनों मौलाना थे, ये पकड़े गये। इनकी जगह दूसरे आ जायेंगे, वो पकड़े जायेंगे, तीसरे आ जायेंगे। अब मौलाना बनने के लिए कोई तपस्या, तप या साधना तो करनी नहीं। जैसी खबर आती है कि कुछ आतंकी तैयार करते हैं, कुछ लव जिहाद को बढ़ावा देते हैं, कुछ हिंसा को उकसाते हैं तो कुछ धर्मांतरण करा रहे हैं। लेकिन सवाल ये है कि दो साधुओं की हत्या हो या मंदिर के तोड़े जाने की घटना या अब एक हजार हिन्दू समुदाय के लोगों का धर्मांतरण होना, कितने अखाड़े सामने आये? क्या स्वतंत्र सत्ता स्थापित करने वाले संतों में ब्रह्मकुमारी के लोग सामने आयेंगे? सत्यसांई बाबा वाले, महर्षि महेश योगी, श्रीश्री रविशंकर, आनंदमार्ग के आनंदमूर्ति, राधा स्वामी सत्संग के लोग, जय गुरुदेव बाबा वाले, कल्कि वाले आचार्य प्रमोद कृष्णम सामने आयेंगे? या सुखविन्दर कौर उर्फ राधे मां आन्दोलन करेगी? सच्चिदानंद गिरि वाले, गुरमीत सिंह डेरा सच्चा सौदा वाले, निर्मल बाबा समोसा खाकर दूसरे का भाग्य बता देते हैं, क्या ये नहीं पता था कि एक हजार लोगों का धर्म परिवर्तन हो गया? इसके अलावा इच्छाधारी भीमानंदन उर्फ शिवमूर्ति द्विवेदी के लोग हो या स्वामी असीमानंद। कथित त्रिकालदर्शी संत रामपाल, आचार्य कुशमुनि, मलखान गिरि, बृहस्पति गिरि आदि असंख्य स्वयंभू संत हैं।

इसके अलावा 13 अखाड़े हैं, महंत हैं, मंडलेश्वर हैं, महामंडलेश्वर तथा शंकराचार्य हैं और इनसे जुड़े लाखो करोड़ों संन्यासी हैं, कहाँ हैं सब के सब? हरिद्वार, वाराणसी, उज्जैन, नासिक, प्रयागराज के फाइव स्टार आश्रम में लेटने वाले ये लोग क्यों अपने धर्म के लोगों पर होते अत्याचार पर मौन रहते हैं? वो सुबह सुबह टीवी चौनलों पर बैठकर लोगों की कुंडली देखने वाले लोगों पूरब पश्चिम जाने पर ज्ञान पेलने वाले वो जो नाम राशि देखकर भविष्य बताने वाले क्या वो ये नहीं देख पाए कि उनके नीचे से एक हजार गरीब लोग धर्म परिवर्तित कर दिए? माना कि हिंसा या उत्पात न तो हमारे संविधान में है और न ही सनातन धर्म की शिक्षा में। नहीं लेकिन क्या मुंह भी नहीं खोल सकते? क्या काट नहीं सकते तो क्या फुंकार भी नहीं मार सकते? क्या ये लोग सिर्फ कुम्भ में शाही स्नान करने के लिए हैं? ये सवाल इसलिए क्योंकि हिन्दुओं के मेहनत की कमाई इन्हें धर्म रक्षा और उसके प्रचार के लिए मिलती है तो ये सवाल बन जाते हैं?

क्योंकि जब शिया नेता वसीम रिजवी कुरान की 26 विवादित आयतों को हटाने के बारे में सर्वोच्च न्यायालय में एक याचिका देता है सब मौलाना खड़े होकर फतवे जारी कर देते हैं? जब गायक सोनू निगम या इलाहाबाद विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. संगीता श्रीवास्तव ने अपने घर के पास मस्जिद से अजान के नाम पर होने वाले शोर-की शिकायत करती हैं तो आसमान टूट पड़ता है! मंदिर में किसी आसिफ को पानी नहीं पीने देने पर नरसिम्हानन्द पर गाज गिर जाती है।

पूरा देश सर पर उठा लिया जाता है, नरसिम्हानन्द के खिलाफ फतवों की बाढ़ आ जाती है लेकिन एक अखाडा एक महंत एक मंडलेश्वर, महामंडलेश्वर, एक शंकराचार्य उसके पक्ष में खड़ा होता नहीं दिखाई देता?

इस चुप्पी के कारण अफगानिस्तान चला गया। पाकिस्तान चला गया, कश्मीर आधा बचा है, आधा भी क्या बस जम्मू के कुछ जिले बचें है। बंगाल का हाल, केरल का हाल सब जानते हैं। कई राज्यों में हिन्दू अल्पसंख्यक हो चला है, बाकि राज्यों में ईसाई मिशनरीज और कथित मौलाना भूखे भेडियों की तरह घात लगाये बैठे हैं। लव जिहाद, जमीन जिहाद, ये जिहाद, वो जिहाद कर रहे हैं। चुपके से एक हजार महिलाओं को, बच्चों को गटक जाते हैं, लेकिन किसी अखाड़े गुरु बाबा का कोई फतवा नहीं आता।

ये चुप्पी शानदार है क्योंकि पूर्वी जर्मनी ने कभी शिकायत नहीं की कि उसे पश्चिमी जर्मनी निगल रहा है। पश्चिमी जर्मनी ने कभी शिकायत नहीं की कि उसे नॉटो निगल रहा है। सब समय का ऐसा प्रवाह साबित हुआ, जैसे कभी कुछ हुआ ही न हो। हमारे साथ भी वही हो रहा है। ये अपनी संख्या इसी कारण बढ़ा रहे हैं क्योंकि इनका अपना लक्ष्य है जिसे इन्हें प्राप्त करना है। ये सांस्कृतिक मैच है जिसमें इन्हें गोल करना है। ये धार्मिक क्रिकेट टेस्ट मैच हैं जिसमें इन्हें चौके-छक्के जड़कर अपनी सेंच्युरी बनानी है और मैच जीतना है जैसे 1947 में जीता था।

इसमें इन्हें मदद कर रहे हैं हमारे संतों, गुरुओं की चुप्पी और लुटियन्स मीडिया हाउस, जो पत्रकारों को एडीटर साहब बना देते हैं। जिसके बाद सामूहिक रूप से ये खुद को सेकुलर, लिबरल, फेमिनिस्ट, लोकतांत्रिक, बनकर इनका साथ देते हैं। इसके अलावा किसी नापसंद घटना पर क्रोध और आक्रोश की एक अत्यंत तीव्र प्रतिक्रिया देने वाले इन्टॉलरेंस के खोजी विशेषज्ञ बन जाते हैं। बालीवुड के भांड, अरब देशों का पैसा वामपंथी पत्रकारिता का दिमाग आई.एस.आई. का टारगेट इन लोगों को हिम्मत देता है।

क्योंकि इन्हें यकीन है कि एक न एक दिन भारत में इनके टाइप की कोई हुकूमत तामीर हो जाएगी। उस दिन अंतिम हिन्दू को भी समाप्त किया जा चुका होगा। इसी अंत के परिणाम के हसीन सपनों के कारण इस्लामिस्ट भी इनके पड़ोसी हो लेते हैं क्योंकि उन्हें भी अपने सपनों पर पूरा यकीन है। लेकिन ये यकीन सिर्फ हमारी चुप्पी के कारण है क्योंकि हम सेकुलर हैं और वो मजहबी। अगर चैन से सोना है तो अभी जाग जाइये।

- सम्पादक

- शेष पृष्ठ 7 पर

विज्ञान में अग्नियाँ

विज्ञान के भौतिक शास्त्र के अनुसार बिजली, प्रकाश, ध्वनि, अग्नि, बल आदि उर्जा यानी शक्ति के विविध रूप हैं। इन्हें एक-दूसरे शक्ति के रूपों में परिवृत्त किया जा सकता है। क्योंकि बगैर शक्ति के कोई कार्य नहीं संपन्न हो सकता है। अगर हमें सीढ़ियां चढ़नी हैं तो हमें बल लगाकर अपने एक पैर को उठाकर अगली ऊपरी सीढ़ी पर रखना ही होगा और ऐसा ही वांछित मंजिल तक पहुंचने को लगातार करना ही होगा। यदि हम कुछ भार ले जाना है तो उसके लिए अतिरिक्त बल लगाना ही होगा। लिफ्ट द्वारा यही बल बिजली के मोटरों द्वारा लगा कर, हम स्वयं बगैर कुछ किए मंजिलों पर चढ़ते हैं। विज्ञान में इसे एनर्जी यानी शक्ति कहते हैं। यदि हमें जल को गर्म करना है तो हम उसे बिजली अथवा अग्नि के प्रयोग से उर्जा यानी गर्मी देकर गर्म कर सकते हैं।

ज्वलनशील पदार्थों को ईंधन भी कहते हैं। विज्ञान के रसायनशास्त्र में अग्नि उसे कहते हैं, जब हवा के घटक आक्सीजन गैस के साथ, ईंधन का तीव्र ऑक्सीकरण यानी रसायनिक क्रिया होता है जिससे इन दोनों के संयोग के फलस्वरूप, गर्मी यानी उष्मा, और अन्य अनेक रासायनिक उत्पाद जैसे कार्बन डाइऑक्साइड, कुछ अन्य गैसें और जल भाप के रूप में उत्पन्न होते हैं। तीव्र ज्वलन यानी दहन में कई रगं की ज्वालायें प्रकाश के साथ उत्पन्न होती हैं। इन्हे ज्वालायुक्त अग्नि कहते हैं। जो दहन तीव्र नहीं होते हैं, उनमें ज्वालायें नहीं होती हैं जैसे कोयला या कंडा के दहन में। इन्हें ज्वालारहित अग्नि कहते हैं। दहनशील पदार्थ में सन्निहित अशुद्धि के कारण ज्वालाओं के रंग और अग्नि की तीव्रता में अंतर हो सकता है। सामान्य रूप में अग्नि यानी आग से गर्मी पैदा होती ही होती है। जब अग्नि एक बार जलने लगती है यानी श्रृंखलाबद्ध रसायनिक क्रिया प्रारभं हो जाती है, तो जब तक ऑक्सीजन और दहनशील दोनों पदार्थों की उपस्थिति रहती है, तभी तक वह दहन यानी ज्वलन होती रहती है। ऑक्सीजन और ईंधन में से किसी एक को अलग करके, अग्नि को बुझाया जा सकता है। अग्नि पर पानी की पर्याप्त बौछार पड़ती है तो ईंधन को ऑक्सीजन मिलने में बाधा पड़ती है, तब अग्नि धीमी हो जाती है एंव बुझ भी सकती है। अग्नि पर कार्बन डाइऑक्साइड के प्रयोग से भी उसे बुझाया जा सकता है। इसी गैस का उपयोग अग्नि बुझाने वाले यंत्रो में होता है। इसी प्रकार जल रही अग्नि पर बालू, मिट्टी, गीला कपड़ा, गीला कंबल आदि को डालकर भी बुझाया जा सकता है, जो हवा की आपूर्ति कम एंव बंद भी कर देती है। अग्नि की तीव्रता के अनुसार विभिन्न पदार्थों पर भिन्न भिन्न प्रभाव होता है। आधुनिक विज्ञान में अग्नि के आँच यानी तीव्रता को तापमान, तापक्रम कहते हैं और प्राय: इसे सेंटीग्रेड यानी सेल्सियस अथवा फारेनहाइट के इकाई में नापा जाता है। इन दोनों के इकाइयों को इस उदाहरण से समझें कि शुद्ध जल शून्य सेंटीग्रेड तापमान पर जम जाता है जो 32 फारेनहाइट के बराबर होता है। इसी प्रकार शुद्ध जल 100 सेंटीग्रेड तापमान पर उबलने लगता है, जो 212 फारेनहाइट के बराबर होता है। इसे हम ऐसे समझ सकते हैं कि जैसे वर्तमान में हम किसी भी सामान के भार को किलोग्राम, ग्राम एंव मिलीग्राम में तौलते हैं, जिसे हम 1960 के पहले सेर, छटांक एंव तोला आदि में तौला जाता था। हम स्वस्थ मनुष्यों का तापमान 98.4 फारेनहाइट होता है। बुखार की बीमारी में शरीर का तापमान बढ़ जाता है। मनुष्य शरीर के 101 फारेनहाइट तापमान तक को सामान्य बुखार और इससे ज्यादा 102 फारेनहाइट तापमान तक को तेज बुखार और 102 फारेनहाइट से अधिक तापमान को 'बहुत तेज बुखार' कहते हैं। विभिन्न पदार्थों के दहन यानी ज्वलन से उत्पन्न ज्वालाओं के लपलपाती शिखाओं के रगं, दहन हो रहे पदार्थों के रसायनों एंव तापमान पर निर्भर होते हैं। लकड़ी एंव वनस्पति पदार्थ लगभग 150 सेंटीग्रेड पर सुलगना प्रारभं करते हैं। कोयला या कंडा के अग्नि का तापमान 300 से 800 सेंटीग्रेड होता है। जल रही मोमबत्ती एंव वनस्पति, लकड़ी आदि पदार्थों के ज्वालाओं में आतंरिक सबसे नीचे जहाँ ज्वालाएँ प्रारभं होती है, वहीं पर काले रगं का घेरा यानी त्रिशंकु ज्वालाएं दिखाई देती है जिसका तापमान 450 से 550 सेंटीग्रेड होती है। इस त्रिशंकु यानी कोन के ऊपर लाल रगं के ज्वाला का तापमान 550 से 800 सेंटीग्रेड, नारगीं रगं के ज्वाला का 800 से 1000, सफेद 1000 से 1200 एंव नीला रगं के ज्वाला का 1200 से 1650 सेंटीग्रेड होता है। मोमबत्ती आदि के ज्वलन, दहन में जिन कोयला के कणों का दहन नही हो पाता है, वह ज्वालाओं के ऊपर कुछ ऊँचाई तक आँखों से काला रगं के कणों में उड़ते हुए दिखाई देते हैं। जिन पदार्थों एंव लकड़ियों आदि में पोटेशियम तत्व होते हैं, के दहन में बैंगनी रगं की ज्वालाओं का तापमान 1200 से 1400 सेंटीग्रेड होता है।

अग्नि एंव पदार्थ की अवस्थायें

(अ) पदार्थों की भौतिक अवस्था- विज्ञान के अनुसार संसार में जितने पदार्थ हैं, वह उनके तापमान के अनुसार, तीन अवस्थाओं, प्रथम ठोस, द्वितीय तरल अथवा तश्तीय वाष्प यानी गैस की अवस्था में रहते हैं। जैसा उपरोक्त लिखा है कि जल, शून्य यानी 0 सेंटीग्रेड से 100 सेंटीग्रेड के तापमान के बीच में तरल अवस्था में रहता है, 0 सेंटीग्रेड से कम पर ठोस अवस्था यानी बर्फ के रूप में तथा 100 सेंटीग्रेड से ऊपर तापमान पर वाष्प रूपातंरित होकर यानी भाप, गैस अवस्था में रहता है। उसी प्रकार घृत लगभग 25 डिग्री सेंटीग्रेड से लगभग 160 सेंटीग्रेड के बीच तरल अवस्था में रहता है, 25 सेंटीग्रेड से कम पर रूपातंरित होकर ठोस अवस्था तथा 160 सेंटीग्रेड से ऊपर तापमान पर रूपातंरित होकर भाप, गैस, वाष्प यानी सूक्ष्मतम कणों की वायुरूप अवस्था में रहता है और वायुमंडल में फैलने लगते हैं। इसी सूक्ष्मतम कण की रुपातंरित अवस्था की बात, सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास- 3 यज्ञ संबधी प्रश्नों के उत्तरों में लिखा है। इन सूक्ष्मतम कणों में, पदार्थ के समस्त भौतिक गुण जैसे रगं, स्वाद, गंध यानी सुगधं या दुर्गधं एंव रसायनिक गुण जैसे औषधीय, मीठापन गुण आदि एक समान होते हैं। कुछ भी किसी रूप में कोई बदलाव नहीं होता है। संसार के ज्यादातर सामग्रियों को ठंडा अथवा गर्म कर ठोस, तरल, वाष्प यानी गैस के रूप में बार बार परिवर्तित किया जा सकता है। जैसे जल को गर्म करते रहने पर वह भाप यानी वाष्प बन कर वायुमंडल में उडकर फैलने लगता है, भाप को ठंडा कर जल और जल को ठंडा कर बर्फ बनाया जा सकता है। बर्फ को गर्म करने पर जल बन जाता है। इसी प्रकार अधिकाशं बनस्पति सामग्रियों जिसमें उड़नशील पदार्थ रहते हैं, को लगभग 160 डिग्रीसेंटीग्रेड से अधिक गर्म करने पर उनमें स्थिति उड़नशील रसायनों को वाष्प यानी धुंवा यानी वायुरूप में हवा में फैलने लगते हैं, जिसमें उनकी सुगंध, स्वाद एंव सभी गुण यथावत् होते हैं। दूध तरल अवस्था में होता है। इसे लगातार उबालने पर जल की मात्रा घटती जाती है और जब जल की मात्रा बहुत ही कम हो जाती है, तब यह बहुत गाढ़ा पदार्थ रबड़ी फिर और गाढ़ा होने पर खोया बन जाता है, जिसमें दूध के समस्त गुण यथावत रहते हैं। जिसमें जल की मात्रा बढ़ाने से पुन: दूध बन जाता है क्योंकि दूध से खोया, रबड़ी बनाने में कोई रासायनिक परिवर्तन नहीं होता है बल्कि मात्र अवस्था परिवर्तन ही होता है। यदि दूध में नीबू या थोड़ा दही डाल कर जमा दिया जाता है तब यह दही बन जाता है जिसमें दूध के अधिकाशं गुण परिवर्तित हो जाते हैं जिससे इससे पुन: दूध वापस नहीं बनाया जा सकता है क्योंकि दूध में नीबू, दही आदि डालने से, इनका दूध के रसायनों के साथ, रासायनिक क्रिया होने के कारण रसायनिक परिवर्तन हो जाते हैं। इसी प्रकार दूध से पनीर, छेना आदि बनाने के बाद इसमें दूध के मूल गुण नहीं रहते हैं।

.....सूक्ष्मतम कण की रूपातंरित अवस्था की बात, सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास- 3 यज्ञ सम्बन्धी प्रश्नों के उत्तरों में लिखा है। इन सूक्ष्मतम कणों में, पदार्थ के समस्त भौतिक गुण जैसे रगं, स्वाद, गंध यानी सुगधं या दुर्गधं एंव रसायनिक गुण जैसे औषधीय, मीठापन गुण आदि एक समान होते हैं। कुछ भी किसी रूप में कोई बदलाव नहीं होता है। संसार के ज्यादातर सामग्रियों को ठंडा अथवा गर्म कर ठोस, तरल, वाष्प यानी गैस के रूप में बार बार परिवर्तित किया जा सकता है। जैसे जल को गर्म करते रहने पर वह भाप यानी वाष्प बन कर वायुमंडल में उडकर फैलने लगता है, भाप को ठंडा कर जल और जल को ठंडा कर बर्फ बनाया जा सकता है। बर्फ को गर्म करने पर जल बन जाता है।.....

(ब) अग्नि का पदार्थों पर प्रभाव - अग्नि के संपर्क में आने वाले पदार्थों में जब उष्मा, गर्मी समाती यानी प्रविष्टि यानी विलीन होती जाती है तब उनके कणों के बीच की दूरी एंव तापमान बढ़ती जाती है। इससे उसका आयतन यानी लंबाई, चोड़ाई, ऊँचाई यानी जगह घेरने की क्षमता भी बढ़ती जाती है। यह बढ़ना ठोस पदार्थों पर बहुत कम, तरल पदार्थों पर कम और गैसिये पदार्थों पर अत्यधिक होता है। तरल एंव गैसिये पदार्थों के बढ़ने को हम अपने घर में साधारण प्रयोगों को करके देख एंव सत्यापित कर सकते हैं। एक काँच की शीशी में लबालब जल भर कर ढक्कन कसकर बंद कर दीजिए। अब इसे किसी बर्तन में पूरी शीशी रखकर, बर्तन मे इतना जल भरिए कि पूरी शीशी डूब जाये। अब इस बर्तन को चूल्हे पर रखकर कर धीरे धीरे गर्म होने दीजिए। स्वयं थोड़ा दूर किसी दिवाल या दरवाजे के पीछे सुरक्षित स्थान पर खड़े हो जाइए। बर्तन, जल, शीशी एंव भरे जल को गर्म होने दीजिए। शीशी ठोस होने के कारण कम बढ़ेगा परतुं उसमें भरा जल अधिक बढ़ेगा जिससे शीशी के अदंर जल का दबाव बढ़ता जाएगा और एक स्थिति में कुछ दगने के आवाज के साथ या तो ढ़क्कन खुल जाएगा या फिर शीशी टूट जाएगी। एक गुब्बारा लेकर उस में हवा भर दीजिए। अब जब इसे गैस के चूल्हे के बर्नर के ऊपर उपयुक्त ऊँचाई लगभग 4, 5 इंच ऊपर रखिए, जिससे गुब्बारे के रबड़ एंव अंदर भरे हवा को गर्मी मिलेगी। इससे रबड़ बढ़कर अधिक लचीला होगा परतुं अंदर की हवा का आयतन तेजी से बढ़ेगा जिससे गुब्बारा अधिक फूलता जाएगा और फूलते फूलते फट जाएगा। जब प्रेशर कुकर को हम गैस पर चढ़ा देते हैं तब अंदर का पानी गर्म होने लगता है। प्रेसर कुकर ठोस होने के कारण कम बढ़ता है पर अंदर का जल तरल कुछ अधिक बढ़ता है। जल का तापमान 100 डिग्री सेंटीग्रेड पहुंचते ही उबलने लगता है, जो और अधिक गर्मी पाकर वाष्प यानी भाप में परिवर्तित होने लगता है जिससे इसका आयतन अत्यधिक बढ़ने को होता है, परतुं चारों ओर से घिरा, बंद होने के कारण बढ़ नहीं पाता है। ऐसी स्थिति में प्रेशर कुकर के अंदर वाष्प दबाव अत्यधिक बढ़ता जाता है। जब भाप का दबाव बहुत ज्यादा बढ़ जाता है, तब वह सीटी को ऊपर उठाने में सक्षम हो करके सीटी बजाते हुए बाहर निकलने लगता है।

विद्वानगण इस लेखनी पर अपनी शंका, राय एंव त्रुटियां अवश्य ही पत्र, ईमेंल, मोबाइल/व्हाट्सअप मेसेज से लिखने का कष्ट करें जिससे इसे अधिक उपयोगी बना सकूं और त्रुटियों का निराकरण भेजूगां।

- वेद प्रकाश गुप्ता,
व्हाट्सअप-9451734531,
Email - vedpragupta@gmail.com

बलिदान दिवस
23 जून पर विशेष स्मरण

डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी का बलिदान : पुण्य स्मरण

छह जुलाई, 1901 को कोलकाता में श्री आशुतोष मुखर्जी एवं श्रीमती योगमाया देवी के घर में जन्मे डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी को दो कारणों से सदा याद किया जाता है। पहला तो यह कि वे योग्य पिता के योग्य पुत्र थे। श्री आशुतोष मुखर्जी कलकत्ता विश्वविद्यालय के संस्थापक उपकुलपति थे। 1924 में उनके देहान्त के बाद केवल 23 वर्ष की अवस्था में ही श्यामाप्रसाद को विश्व विद्यालय की प्रबन्ध समिति में ले लिया गया। 33 वर्ष की छोटी अवस्था में ही उन्हें कलकत्ता विश्वविद्यालय के उपकुलपति की उस कुर्सी पर बैठने का गौरव मिला, जिसे किसी समय उनके पिता ने विभूषित किया था। चार वर्ष के अपने कार्यकाल में उन्होंने विश्वविद्यालय को चहुँमुखी प्रगति के पथ पर अग्रसर किया।

दूसरे जिस कारण से डा. मुखर्जी को याद किया जाता है, वह है जम्मू कश्मीर के भारत में पूर्ण विलय की माँग को लेकर उनके द्वारा किया गया सत्याग्रह

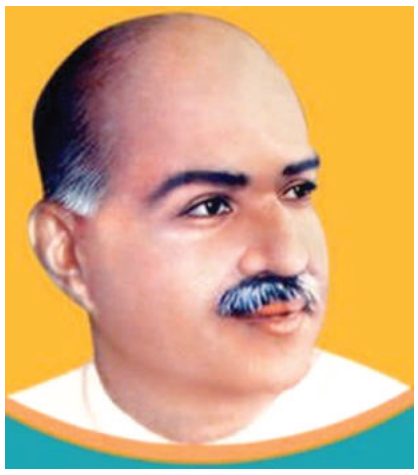

एवं बलिदान। 1947 में भारत की स्वतन्त्रता के बाद गृहमन्त्री सरदार पटेल के प्रयास से सभी देसी रियासतों का भारत में पूर्ण विलय हो गया, पर प्रधानमन्त्री जवाहरलाल नेहरू के व्यक्तिगत हस्तक्षेप के कारण जम्मू कश्मीर का विलय पूर्ण नहीं हो पाया। उन्होंने वहाँ के शासक राजा हरिसिंह को हटाकर शेख अब्दुल्ला को सत्ता सौंप दी। शेख जम्मू कश्मीर को स्वतन्त्र बनाये रखने या पाकिस्तान में मिलाने के षड्यन्त्र में लगा था।

शेख ने जम्मू कश्मीर में आने वाले हर भारतीय को अनुमति पत्र लेना अनिवार्य कर दिया। 1953 में प्रजा परिषद तथा भारतीय जनसंघ ने इसके विरोध में सत्याग्रह किया। नेहरू तथा शेख ने पूरी ताकत से इस आन्दोलन को कुचलना चाहा, पर वे विफल रहे। पूरे देश में यह नारा गूँज उठा – एक देश में दो प्रधान, दो विधान, दो निशान– नहीं चलेंगे।

डा. मुखर्जी जनसंघ के अध्यक्ष थे। वे सत्याग्रह करते हुए बिना अनुमति जम्मू कश्मीर में गये। इस पर शेख अब्दुल्ला ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। 20 जून को उनकी तबियत खराब होने पर उन्हें कुछ ऐसी दवाएँ दी गयीं, जिससे उनका स्वास्थ्य और बिगड़ गया। 22 जून को उन्हें अस्पताल में भर्ती किया गया। उनके साथ जो लोग थे, उन्हें भी साथ नहीं जाने दिया गया। रात में ही अस्पताल में ढाई बजे रहस्यमयी परिस्थिति में उनका देहान्त हुआ।

मृत्यु के बाद भी शासन ने उन्हें उचित सम्मान नहीं दिया। उनके शव को वायुसेना के विमान से दिल्ली ले जाने की योजना बनीय पर दिल्ली का वातावरण गरम देखकर शासन ने विमान को अम्बाला और जालन्धर होते हुए कोलकाता भेज दिया। कोलकाता में दमदम हवाई अड्डे से रात्रि 9.30 बजे चलकर पन्द्रह कि.मी दूर उनके घर तक पहुँचने में सुबह के पाँच बज गये। 24 जून को दिन में ग्यारह बजे शुरू हुई शवयात्रा तीन बजे शमशान पहुँची। हजारों लोगों ने उनके अन्तिम दर्शन किये।

आश्चर्य की बात तो यह है कि डा. मुखर्जी तथा उनके साथी शिक्षित तथा अनुभवी लोग थे, पर पूछने पर भी उन्हें दवाओं के बारे में नहीं बताया गया। उनकी मृत्यु जिन सन्देहास्पद स्थितियों में हुई तथा बाद में उसकी जाँच न करते हुए मामले पर लीपापोती की गयी, उससे इस आशंका की पुष्टि होती है कि नेहरू और शेख अब्दुल्ला द्वारा करायी गयी चिकित्सकीय हत्या थी। डा. श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने अपने बलिदान से जम्मू-कश्मीर को बचा लिया। अन्यथा शेख अब्दुल्ला उसे पाकिस्तान में मिला देता।

– डॉ. विवेक आर्य

दिल्ली में पर्यावरण दिवस पर आर्य समाज द्वारा वृक्षारोपण और विशेष यज्ञों के आयोजन

वृक्षारोपण करना प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य – धर्मपाल आर्य, प्रधान

आर्य समाज सदैव पर्यावरण संरक्षण में अपनी अहम भूमिका निभाता आ रहा है। इस वर्ष विपरीत परिस्थितियों को अनुकूल बनाते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने वृक्षारोपण और विशेष यज्ञों के आयोजन पूरी सावधानी और सतर्कता के साथ किए।

इस अवसर पर दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने वृक्षारोपण करते हुए प्रेरणा प्रदान की कि हर मनुष्य को अपने जीवन काल में वृक्षारोपण अवश्य करना चाहिए। कोरोना काल में जो ऑक्सीजन की कमी के चलते अनेक लोग काल का ग्रास बन गए उसका सबसे बड़ा कारण पेड़ पौधों का लगातार कम होना है। अत: पर्यावरण की आवश्यकता को समझते हुए हर व्यक्ति, परिवार और समाज को वृक्षारोपण के लिए आगे आना चाहिए। वृक्ष ही मानव जीवन को गति, प्रगति और उन्नति की पथ पर आगे बढ़ाते हैं। ये ही जीवन दायनी शक्ति ऑक्सीजन के दाता हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के संवर्धकों ने दिल्ली में जगह-जगह यज्ञों के आयोजन किए और पर्यावरण संरक्षण के लिए लोगों को जागरूक भी किया।

दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने भी अपने घर पर यज्ञ किया तथा सबको प्रतिदिन यज्ञ करने का संदेश देते हुए बताया कि यज्ञ से पर्यावरण की शुद्धि होती है। सभा के निर्देश पर लगभग दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों के अधिकारियों ने भी अपने अपने स्थान पर यज्ञ के आयोजन किए।

बाल बोध

समय का सदुपयोग और सफलता

जीवन में सफलता की प्राप्ति के लिए आवश्यक है कि हम समय का सदुपयोग करना सीखें। आमतौर से मनुष्य का समय बेकार की गप-शप तथा खेल-मनोरंजन में बहुत नष्ट होता है। यदि हम अपने समय को नष्ट होने से बचा लें तथा समय का सदुपयोग करना सीखें तो एक सफल मानव बन सकते हैं।

किन-किन बातों में आदमी अपने समय को नष्ट कर देता है-

(1) फालतू वार्तालाप, (2) फालतू मनोरंजन, (3) अनर्थ कर्म, (4) बेकार बैठकर, (5) खाने-पीने में, (6) विश्राम करने में, (7) पिकनिक या मौजमस्ती में, (8) टी. वी., सिनेमा में तथा (9) ताश-पत्ते या जुए, सट्टे की लत में।

ये सब चीजें जीवन के लिए ज्यादा उपयोगी नहीं हैं। यदि हम इस प्रकार के शौक और ऐशोआराम में अपना कीमती समय बर्बाद कर देंगे तो हम कोई सार्थक काम कैसे कर पाएंगे? बेकार की आदतों से समय के साथ-साथ मनुष्य की शारीरिक व मानसिक शक्ति भी नष्ट होती है। जो लोग उपर्युक्त प्रकार से अपना समय नष्ट करते हैं वे अपने जीवन में कभी सफलता प्राप्त नहीं कर सकते। मानसिक एकाग्रता न होने की वजह से उन्हें हर कार्य में असफलता ही मिलती है।

समय का सदुपयोग कैसे करें?

(1) कोई भी सृजनात्मक कर्म करके या अपनी रुचि की चीजें बनाने में। (2) बगीचे की देखभाल करने में। (3) श्रेष्ठ साहित्य का अध्ययन करके। (4) किसी प्रकार का लेख या साहित्यिक रचना लिखने में। (5) किसी अच्छे विषय की चित्रकारी करके। (6) संगीत, कला और नृत्य-साधना सीखकर। (7) गरीब, विधवा, विक्लांग, अनाथ तथा असहाय व्यक्तियों की सेवा में। (8) वृद्धों की देखभाल करने में। (9) प्राकृतिक या आध्यात्मिक रहस्यों का मनन चिंतन करने में। (10) दूसरों के दु:ख की बातें सुनिए तथा उनकी समस्याओं का उचित समाधान कीजिए।

(11) प्रात:काल कसरत, व्यायाम या योगाभ्यास कीजिए। (12) अनपढ़ व्यक्ति को पढ़ाइए या अज्ञानी को ज्ञान की दिशा बताइए। (13) विभिन्न प्रकार से सरकार के काम में मदद करके या देशसेवा करके। (14) अन्य सृजनात्मक या रचनात्मक कार्य करके इत्यादि।

मृत्यु : एक अनिवार्य सत्य

जो चीज जन्मीं हैं, उसका मरण होना निश्चित है। वैसे तो मनुष्य की आत्मा अमर शक्ति है परन्तु जिस काया को वह धारण करती है, उसका जीवन-मरण होता है। कहीं ऐसा न हो कि हम व्यर्थ की आदतों में अपना समय नष्ट कर दें और मृत्यु आ जाए तथा हम कुछ भी न कर सकें। इसलिए मृत्यु से पहले ही हमें अपना जीवन सफल बनाना है। आप संसार की भलाई या परोपकार के कार्यों में अपने समय को सफल कीजिए। आपको अपने जीवन का मार्ग अपने आप मिल जाएगा।

दुकान के ग्राहक और मौत का कभी इंतजार नहीं किया जा सकता। दोनों कभी भी आ सकते हैं, इसलिए हमें पुण्य की गठरी बांधकर हर समय तैयार रहना चाहिए।

कहते हैं, आदमी अपने साथ कुछ नहीं लाता। वह खाली हाथ इस दुनिया में आता है और खाली हाथ ही चला जाता है। उसे जो कुछ (शरीर, मकान, वस्त्र) मिलता है, इसी पृथ्वी पर मिलता है। इस पृथ्वी पर मनुष्य अच्छे या बुरे नाना प्रकार के कर्म करते हैं। अच्छे कर्मों का नतीजा अच्छा तथा बुरे कर्मों का बुरा परिणाम होता है। बुरे कर्मों का फल दु:ख की प्राप्ति होना है।

सारी आयु मनुष्य जैसे कर्म करता है, उन कर्मों के संस्कार ही उसके साथ जाते हैं, जिसके कारण वह अगले जन्म में सुख (अच्छे कर्मों के कारण) या दु:ख (बुरे कर्मों के कारण) पाता है। यदि हम चाहते हैं कि हमें हर मानव-जन्म में सुख ही मिलता रहे तो हमें अपने समय का सदुपयोग संसार की भलाई के कार्यों में करना चाहिए।

अच्छे कर्म करके ही हम वर्तमान जीवन में आत्मिक सुख-संतोष तथा अगले जन्मों में सर्वसुखों की प्राप्ति करते हैं। परोपकार वह पुण्य कर्म है, जो सुख-शांति का फल ही देता है।

जबकि मृत्यु को टाला नहीं जा सकता, तो क्यों न हम अपना समय अच्छे कार्यों में लगाएं, परोपकार करके पुण्य हासिल करें? जो व्यक्ति समय की कीमत समझता है वही अपने जीवन को सफल बना सकता है।

समय से शिक्षा लीजिए - समय की गति से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। जिस प्रकार समय किसी के लिए नहीं रुकता, उसी प्रकार हमको भी किसी व्यक्ति के लिए नहीं ठहरना चाहिए। यदि हम अकेले हों तब भी हम अपना पुरुषार्थ करते रहें।

समय जिस तेजी से भाग रहा है, हमें भी अपनी उन्नति ऐसे ही तीव्र वेग से करनी चाहिए। जिंदगी की परेशानियों को हम गंभीरतापूर्वक सुलझाएं। समय तो हमें सदैव अपने कर्तव्यपथ पर चलने की प्रेरणा देता है। वह रुकना कब सिखाता है? और न आलसी बनने के लिए कहता है।

समय हमें सफलता का नया हौसला प्रदान करता है। समय की तरह हम भी उमंग-उत्साहपूर्वक अपने कार्य में लगे रहें। समय किसी से सफलता की मांग नहीं करता और न किसी से सहायता मांगता है। हम भी अपने आत्मिक बल के सहारे अपने उद्देश्य-पथ पर बढ़ते जाएं। सफलता खुद ही हमारे पास चलकर आ जाएगी।

अपने आप पर हम भरोसा रखें तथा समय के साथ-साथ चलने का प्रयास करें। जो व्यक्ति परिस्थितियों को अपने अनुकूल बना लेता है तथा समय के साथ चलता है, उसे सफलता शत-प्रतिशत मिलती है।

दयानंद सेवाश्रम संघ के अंतर्गत महाशय धर्मपाल आर्य प्रतिभा विकास संस्थान के

प्रतिभावान विद्यार्थी ने फहराया सफलता का परचम

अखिल भारतीय सेवा श्रम संघ के अंतर्गत महाशय धर्मपाल आर्य प्रतिभा विकास संस्थान के प्रतिभावान विद्यार्थी कुमार सौरव, जमुई बिहार, को बिहार लोक सेवा आयोग की प्रशासनिक सेवाओं की परीक्षाओं में अंतिम रूप से चयनित होने पर आर्य जगत की ओर से बधाई और बहुत बहुत शुभकामनाएं। आर्य समाज द्वारा संचालित इस महान सेवा प्रकल्प के माध्यम से कुमार सौरव को इस अनुपम उपलब्धि की प्राप्ति के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेश चंद्र आर्य जी ने कहा कि अथक परिश्रम और पुरुषार्थ का परिणाम हमेशा सुखदाई होता है, कुमार सौरव को बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं। दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने बधाई देते हुए कुमार सौरव को दीर्घायु और उज्जवल भविष्य का आशीर्वाद दिया, अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के प्रधान एवं सफल उद्योग पति जे.बी.एम. ग्रुप के चेयरमैन श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी ने शुभकामनाएं और आशीर्वाद प्रदान करते सदा आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान की। सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने तथा कोषाध्यक्ष श्री विद्यामित्र ठुकराल जी, श्री जोगेंद्र खट्टर जी इत्यादि सभी आर्य नेताओं ने कुमार सौरव को बधाई, शुभकामनाएं और आशीर्वाद प्रदान किया। कुमार सौरव ने आर्य समाज एवं महर्षि दयानंद सरस्वती जी के प्रति कृतज्ञता और आभार व्यक्त करते हुए हमेशा आर्य समाज के सिद्धांतों के अनुसार जीवन जीने की बात कही और सभी अधिकारियों का धन्यवाद किया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजनाओं के लिए सहयोग/दान अब और भी आसान: QR कोड स्कैन करते ही होगा भुगतान

आपको जानकर हर्ष होगा कि बैंक द्वारा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को डिजिटल पेमेंट हेतु कोड़ जारी किया गया है। अब आप किसी भी पेमेंट माध्यम - पेटीएम, फोन पे, गूगल पे, मास्टर/वीजा रुपये, भीम पे - से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित किसी भी योजना/प्रकल्प के लिए सहयोग एवं दान राशि का भुगतान केवल मात्र क्यू.आर. कोड को स्कैन करके कभी भी-कहीं से भी कर सकते हैं।

आप इस कोड के माध्यम अपने आर्यसमाज की ओर से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को देय दशांश एवं वेद प्रचार राशियों का भी भुगतान कर सकते हैं।

scan here to pay

Delhi Arya Pratindhi Sabh

MID 037111021930104 TID 78577778

ME Helpdesk: 18602332332 / 022-40426060

mastercard 512260002457893

BHIM RuPay 6100020024578951

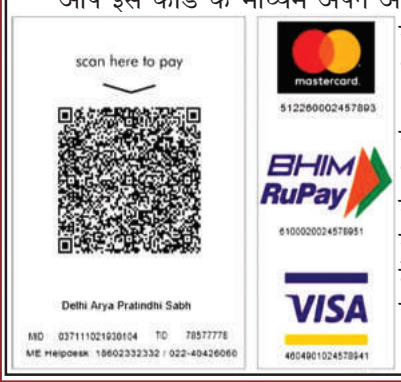

VISA 4604901024578941

आप द्वारा इसके माध्यम से भेजी गई राशि तत्काल सभा को प्राप्त हो जाएगी। कृपया भुगतान करते ही आपके पास जो मैसेज आए उसका स्क्रीन शॉट लेकर अथवा सीधे उस मैसेज को 9540040388 पर व्हाट्एप्प अथवा टेलिग्राम कर दें, जिससे आपको तुरन्त रसीद जारी की जा सके।

- विनय आर्य, महामन्त्री (9958174441)

Makers of the Arya Samaj : Maharishi Dayanand Saraswati

Continue From Last issue

The Search for Truth

This was a very important moment in his life. He was turning his back upon his home and everything, but he d id not care about that. Nor was he moved by the affections ofhis mother and the love of his brothers and sisters. Landed property had no attraction for him. Nor had the wealth and comforts of this world any charm for him. He gave up all these, because he wanted to find the one, true God. This was now the goal of his life.

This did not seem a very easy thing to do, but Mool Shankar was not afraid of anything. Difficulties could not make him give up his task, nor could dangers frighten him. He was equally prepared for hardships and suffering. So he travelled on in search of his goal. Ifhe was afraid of anything it was of being caught again. Otherwise, he went on his way, cheerfully enduring cold and hunger.

After some days he reached Baroda. There he learnt that a big fair would be held on the banks of the Narmada, where all the learned pundits and scholars would be present. Always eager to acquire knowledge he went there. For a few days he stayed there, but without getting what he wanted. Then he went on to another place. There he met Swami Pumanand Parmhans from whom he learnt some useful things.

At this very time he was initiated into sannyas by Swami Purananand Saraswati. Then he came to be known as Swami Dayanand Saraswati. This new life of his had certain privileges. For instance, as a Brahmchari he had to cook his meals with his own hands and this meant much waste of time. But as a sanyasi he could beg for his food from others. The time saved in this way he could devote to his studies. Swami Dayanand was always very eager to learn. Wherever he went he made the best use of his time. Most persons he came across added something to his store of knowledge and wisdom. He learnt yoga from one and grammar from another. He was very much

.....He was very much interested in yoga or the science of holding one's breath, because it gives one perfect control over one's body and mind. During all these journeys Swami Dayanand had only one object in view. It was to find a guru who could teach him how to overcome death and to find God. But he knew this was not an easy thing to do. Still he persevered. Knowing that in the places sacred to the Hindus lived some holy persons he went there. Yet nowhere could he find a saint or a holy man. Thus he visited holy places like Hardwar, Rishikesh, Rudra Pryag, and Gupt Kashi. But nowhere did he come across a single person who could settle his doubts.....

interested in yoga or the science of holding one's breath, because it gives one perfect control over one's body and mind. During all these journeys Swami Dayanand had only one object in view. It was to find a guru who could teach him how to overcome death and to find God. But he knew this was not an easy thing to do. Still he persevered. Knowing that in the places sacred to the Hindus lived some holy persons he went there. Yet nowhere could he find a saint or a holy man. Thus he visited holy places like Hardwar, Rishikesh, Rudra Pryag, and Gupt Kashi. But nowhere did he come across a single person who could settle his doubts. However, he did not lose heart, and still went on.

At last he set his face towards the Himalayas. Their snow-clad peaks had a great deal of attraction for him and he wanted to see them. After many days' journeying, he came to Ukhi Math. It seemed to him like an oasis in the desert. "Here," he said to himself, "I will rest my tired limbs." So he stayed there for a few days.

The Mahant, or the head-priest, ofthe math came to know him and felt very interested in him. The young man was tall and stout, handsome and well-built. He seemed to be learned andto possess a lot of common sense. So the Mahant said to himself, "I am now old and will not live very long. Who will look after this math after me? Why should I not ask this young man to become my disciple and stay here? Surely he will be able to manage this place after my death."

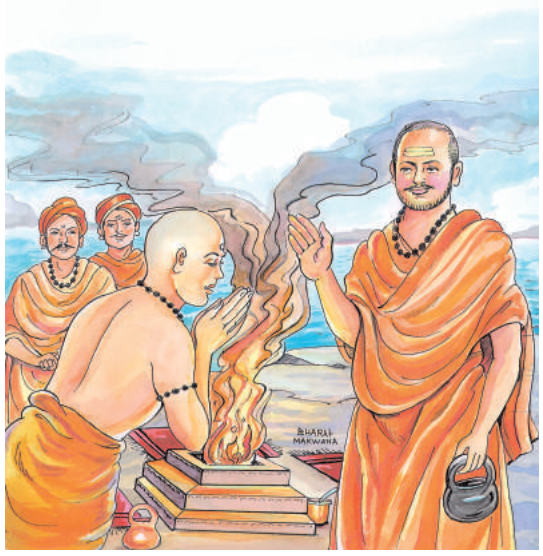

So he sem for Swami Dayanand, and showed to him every possible kindness and regard. Then he said to.him, "Young man, why do you wander from oneplace to another? Why don't you live here? If you do so, I will make you heir to this gaddi. In this way you will inherit property worth lacs of rupees."

When Swami Dayanand heard this he laughed and said, "You apparently do not know, sir, that I do not care for wealth. If it had been my desire to become rich, I should not have left my home. For there I should have inherited lands and much wealth. But I gave up al these things, for I have set my heart upon a different thing. That is why I am wandering from place to place."

When the Mahant heart this he felt annoyed.

"What is this thing, young man, you are out to seek?" he asked him. "Let me know all about it. Surely it must be a big treasure, since you are taking so much trouble." "I want to find the one, true God. I wish to know how to over- come the fear of death. It is for these things that I care most," said Swami Dayanand.

To be continued.....

With thanks By: "Makers of Arya Samaj"

संस्कृत वाक्य प्रबोध

साक्षिप्रकरणम्

गतांक से आगे - संस्कृत	हिन्दी
279. उभयोस्साक्षिण: सन्ति न वा?	दोनों के साक्षी लोग हैं वा नहीं हैं?
280. सन्ति। - हैं।	281. कुत्र वर्त्तन्ते? - कहां हैं?
282. इम उपतिष्ठन्ते।	ये खड़े हैं।
283. अनेन युष्माकं समक्षे शतं मुद्रा दत्ता न वा?	इसने तुम्हारे सामने सौ रुपये दिये वा नहीं?
284. दत्तास्तु खलु।	निश्चित दिये तो हैं।
285. अनेन शतं मुद्रा गृहीता न वा?	इसने सौ रुपये लिये वा नहीं?
286. वयं न जानीम:।	हम नहीं जानते।
287. प्राड्विवाकेनोक्तम्।	वकील ने कहा।
288. अयमस्य साक्षिणश्च सर्वे मिथ्या वादिन: सन्ति।	यह और इसके साक्षी लोग सब झूठ बोलने वाले हैं।
289. कुत इदमेतेषां परस्परं विरुद्धं वचोऽस्त।	क्योंकि यह इन लोगों का वचन परस्पर विरुद्ध है।
290. यतस्त्वया मिथ्यालपितमत एव तवैकसंवत्सरपर्यन्तं कारागृहे बन्ध: क्रियते।	जिससे तूने झूठ बोला इसी कारण तेरा एक वर्ष तक बन्दीघर में बन्धन किया जाता है।
291. अयमुत्तमर्णस्त्वदीयान् पदार्थान् गृहीत्वा विक्रीय वा स्वर्णं ग्रहीष्यति।	यह सेठ तेरे पदार्थों को लेकर अथवा बेच के अपने ऋण को ले लेगा।
292. अयं मदीयानि पञ्चशतानि रूप्याणि स्वीकृत्य न ददाति।	यह मेरे पांच सौ रुपये लेकर नहीं देता।
293. कुतो न ददाति?	तू क्यों नहीं देता?
294. मया नैव गृहीतानि कथं दद्याम्?	मैंने लिये ही नहीं, कैसे दूं?
295. अयम्मम लेखोऽस्ति, पश्यताम्।	यह मेरा लेख है, देखिये।
296. आनय। - लाओ।	297. गृह्यताम्। - लीजिये।
298. अयं लेखो मिथ्या प्रतिभाति।	यह लेख झूठा मालूम पड़ता है।
299. तस्मात् त्वं षण्मासान् कारागृहे वस तवेमे साक्षिणश्च द्वौ द्वौ मासौ तत्रैव वसेयु:।	इससे तू छ: महीने बन्दीगृह में रह और तेरे ये साक्षी दो-दो महीने के लिये वहीं जायें।

क्रमश: - साभार :- संस्कृत वाक्य प्रबोध (प्रकाशित-दिल्ली संस्कृत अकादमी)

प्रथम पृष्ठ का शेष

आर्यसमाज ने की शाहजहांपुर का नाम रामप्रसाद बिस्मिल नगर ..

और उनके साथ अमानवीय अत्याचार भी किए गए, लेकिन देश प्रेमी, राष्ट्रभक्त अमर महान बलिदानियों ने देश की आजादी के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। इन सभी महान देशभक्तों में पंडित राम प्रसाद बिस्मिल का नाम अग्रणी है, समाजसेवी मुंशी इंद्रजीत जी की संगति तथा सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने से पंडित राम प्रसाद बिस्मिल कल्याण मार्ग के पथिक बने उनका उपकार हम सबके ऊपर है, भारत माता को आजाद कराने में जो उन्होंने त्याग और बलिदान किया उससे हमें अपने बच्चों को, समाज को प्रेरणा अवश्य देनी चाहिए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने राम प्रसाद बिस्मिल जी के जीवन को एक आदर्श जीवन बताते हुए कहा कि आरंभ में पंडित जी का जीवन बुराइयों से ग्रस्त था लेकिन महर्षि दयानंद सरस्वती जी की उत्तम शिक्षाओं को अपनाकर उनका कायाकल्प हो गया और उन्होंने अपना सर्वस्व देश के लिए अर्पित कर दिया। 125वीं जन्म जयंती वर्ष भर मनाई जाएगी, जिससे युवा और बच्चों को संस्कारित करने का अभियान चलाया जाएगा।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेश चंद्र आर्य जी के अनुसार पंडित राम प्रसाद बिस्मिल, चंद्रशेखर आजाद, अशफाक उल्ला खान, राजेंद्र लाहिड़ी, ठाकुर रोशन सिंह आदि महान क्रांतिकारियों को स्मरण करते हुए कहा कि इन्हें संगठित करके विश्व को नई दिशा देने का कार्य आर्य समाज ने किया है।

दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने इस अवसर पर भारत सरकार से मांग करते हुए कहा के अमर शहीद पंडित राम प्रसाद बिस्मिल की जन्म भूमि शाहजहांपुर का नामकरण राम प्रसाद बिस्मिल नगर के नाम पर किया जाए तथा उनका पैतृक भवन राष्ट्रीय स्मारक के रूप में विकसित किया जाए।

इस अवसर पर आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश की ओर से पंडित राम प्रसाद बिस्मिल के जीवन पर आधारित एक प्रेरक नाटिका भी प्रस्तुत की गई। श्री वीरेश आर्य जी, लक्ष्य आर्य जी आदि युवाओं ने ओजस्वी कविताओं का पाठ किया बहुत ही प्रेरणा प्रद सुहाग पूर्ण वातावरण में कार्यक्रम संपन्न हुआ।

शोक समाचार

श्री अनिरुद्ध जगनन्नाथ जी का निधन

लघु भारत कहे जाने वाले मॉरिशस के पूर्व राष्ट्रपति एवं प्रधानन्त्री श्री अनिरुद्ध जगनन्नाथ जी का दिनांक 3 जून, 2021 को मॉरीशस में 91 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे भारतीय मूल के थे। मॉरीशस में आर्यसमाज के उत्थान में आपका विशेष स्थान रहा। दिल्ली आगमन पर आर्यसमाज की ओर से उनका विशेष सम्मान भी किया गया था।

पूर्व महापौर श्री महेश शर्मा जी का निधन

दिल्ली के पूर्व महापौर, हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष, आर्यसमाज बाग कड़े खां के पूर्व प्रधान एवं अनेक संस्थाओं से जुड़े श्री महश शर्मा जी का दिनांक 9 जून, 2021 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया।

श्री आनन्द प्रकाश आर्य का निधन

आर्यसमाज बांकनेर के पूर्व प्रधान श्री मांगेराम आर्य जी के सुपुत्र श्री आनन्द प्रकाश आर्य जी (पहलवान) का दिनांक 9 जून, 2021 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

फ्लाइंग सिख पद्मश्री मिलखा सिंह का निधन

फ्लाइंग सिख के नाम से प्रसिद्धि पाने वाले भारतीय धावक पद्मश्री मिल्खा सिंह जी का दिनांक 18 जून, 2021 को 91 वर्ष की आयु में कोरोना संक्रमण से निधन हो गया। कुछ दिन पूर्व ही उनकी धर्मपत्नी का भी निधन हो गया था।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

सेवक चाहिए

आर्य समाज मन्दिर, कृष्ण नगर, दिल्ली-110051 को एक सुयोग्य सेवक की आवश्यकता है। चयनित अभ्यर्थी को उचित मानदेय के साथ आवास एवं बिजली पानी की सुविधा निःशुल्क प्रदान की जाएगी। इच्छुक अभ्यर्थी सम्पर्क करें - ***यशपाल शर्मा, प्रधान 9810006667***

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज बाहरी रिंग रोड
विकासपुरी, नई दिल्ली-110018

प्रधान : श्री ललित चौधरी
मंत्री : श्री डालेश त्यागी
कोषाध्यक्ष : श्री सतेन्द्र सिंह आर्य

आर्य समाज महावीर नगर
नई दिल्ली-110018

प्रधान : श्री यशपाल आर्य
मंत्री : श्री मायाराम शास्त्री
कोषाध्यक्ष : श्री सुभाष चन्द्र खन्ना

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के अन्तर्गत
वैदिक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित
वैदिक साहित्य
अब
amazon
पर भी उपलब्ध
अपनी पसंदीदा वैदिक पुस्तकें घर बैठे प्राप्त करने के लिए आज ही लॉगइन करें
bit.ly/VedicPrakashan
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
मो. 09540040339, 011-23360150

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

Gurukula Kangri (Deemed to be University)
Haridwar-249404 (Uttarakhand)
(NAAC Accredited 'A' Grade Deemed to be University u/s of UGC Act 1956)

VACANCIES
Adv. No. GKV/Estt.-II/01/2021

Applications are invited for appointment to the Teaching (Assistant Professor/ Associate Professor/ Professor) and various Non-teaching posts in prescribed format. The application is to be submitted along with application fee of Rs. 800/- (Rs. 400/- for SC/ST/PWD) for Non-teaching posts and Rs. 1200/- (Rs. 600/- for SC/ST/PWD) for Teaching posts. Application form shall be downloaded from the website **www.gkv.ac.in** and filled in application form along with details of fee payment and all required documents has to be sent to the Registrar by registered/ speed post by **31 July 2021.**

The minimum eligibility/pay level/ reservations/ general conditions/mode of payment of application fee and other details are available on the University website. For teaching posts in Self-Finance Scheme the payscale shall be as per SFS rules 2020.

Registrar

गुरुकुल कांगड़ी (समविश्वविद्यालय)
हरिद्वार - 249404 (उत्तराखण्ड)
(नैक द्वारा 'ए' ग्रेड प्राप्त एवं यू0जी0सी0 एक्ट 1956 के सेक्शन-3 के अन्तर्गत समविश्वविद्यालय)

विज्ञापन सं. गु0का0वि0/स्था0-II/01/2021

रिक्तियाँ

अर्ह अभ्यर्थियों से शिक्षक (असि. प्रोफेसर/एसो. प्रोफेसर/प्रोफेसर) एवं शिक्षकेत्तर पदों पर नियुक्तियों हेतु निर्धारित प्रारूप में आवेदन पत्र आमंत्रित किये जाते हैं। विश्वविद्यालय वेबसाइट से डाउनलोड किए गये आवेदन पत्र आवेदन शुल्क रु. 800/- (रु. 400/- अनु.जाति/अनु.जनजाति/ दिव्यांग वर्ग हेतु) शिक्षकेत्तर पदों के लिए तथा रु. 1200/- (रु. 600/- अनु.जाति/अनु. जनजाति/दिव्यांग वर्ग हेतु) शिक्षक पदों के लिए, के साथ जमा होंगे। पदों का विवरण/न्यूनतम अर्हता/शैक्षिक योग्यताएं/पे लेवल/ आरक्षण/ सामान्य शर्तें एवं सूचनाएं, आवेदन प्रारूप, शुल्क जमा करने के माध्यम इत्यादि की विस्तृत जानकारी विश्वविद्यालय की वेबसाइट **www.gkv.ac.in** पर उपलब्ध है। पूर्ण रूप से भरे आवेदन पत्र आवेदन शुल्क एवं सभी आवश्यक प्रपत्रों के साथ रजिस्टर्ड डाक/स्पीड पोस्ट से आवेदन की **अन्तिम तिथि 31 जुलाई 2021** तक कुलसचिव कार्यालय में पहुंचने चाहिए।

स्ववित्त पोषित योजना के अन्तर्गत शिक्षकों के पदों हेतु वेतनमान विश्वविद्यालय के एस.एफ.एस. रुल्स-2020 के अनुसार होगा।

कुलसचिव

सोमवार 21 जून, 2021 से रविवार 27 जून, 2021
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 24-25/06/2021 (गुरु-शुक्रवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-23
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 23 जून, 2021

संगीत की धुन पर हुआ योग, स्वस्थ रहने का लिया संकल्प

दैनिक जागरण और ओम योग संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में हुआ आयोजन, योगिराज ने कोरोना काल में योग के महत्व पर डाला प्रकाश

- नियमों के तहत सीमित संख्या में शामिल हुए लोग, बाकी जूम एप के जरिये जुड़े
- डा.ओम प्रकाश ने संगीत की धुनों पर योग की विभिन्न रोमांचकारी क्रियाएं करवाईं
- आर्य संदेश चैनल ने योग पर आधारित कार्यक्रम का सीधा प्रसारण किया

जागरण संवाददाता, फरीदाबाद : हराभरा माहौल हो और पृष्ठभूमि में मोर नाच रहा हो। कोयल कू-कू कर रही हो और ऐसे वातावरण में संगीत की धुनों पर जब यौगिक क्रियाएं हों, तो किसे आनंद नहीं आएगा। सोमवार को सातवें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर दैनिक जागरण और ओम योग संस्थान ग्राम पाली के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित विशेष योग कार्यक्रम में ऐसा ही वातावरण देखने को मिला। कोरोना प्रोटोकाल नियमों के तहत संस्थान प्रांगण में आयोजित कार्यक्रम में सीमित संख्या के योग साधकों व ग्रामीणों को योगिराज डा. ओम प्रकाश ने संगीत की धुनों पर योग कराते हुए योग की विभिन्न व रोमांचकारी क्रियाएं करवाकर स्वस्थ भारत के निर्माण में योगदान देने का संकल्प दिलाया। बाकी बड़ी संख्या में लोग जूम एप के जरिए योग कार्यक्रम से जुड़े। आर्य संदेश चैनल पर इस कार्यक्रम का सीधा प्रसारण भी हुआ।

डा.ओम प्रकाश ने योग कराते हुए कहा कि संपूर्ण विश्व में इस वर्ष

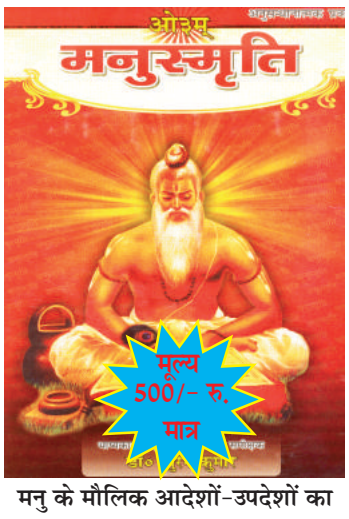

जिले भर मे सातवां अंतरराष्ट्रीय योग दिवस धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर पाली गांव मे स्थित ओम योग संस्थान और दैनिक जागरण के संयुक्त तत्वावधान मे आयोजित संगीतमय योग एवं ध्यान साधना शिविर मे पिरामिड की आकृति बनाते योग प्रशिक्षु • ओम प्रकाश पांचाल

प्रतिष्ठा में,

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर ओम योग संस्थान ग्राम पाली और दैनिक जागरण के संयुक्त तत्वावधान मे आयोजित संगीतमय योग एवं ध्यान साधना शिविर मे नौकासन करते योगिराज डा.ओम प्रकाश, पृष्ठ भूमि मे दिखाई दे रहे है साधक • ओम प्रकाश पांचाल

देश और समाज विभाजन के षड्यन्त्र का पर्दाफास
आओ! जानें मनुस्मृति का सच
स्वाध्याय के लिए प्रक्षेप रहित संस्करण

मनु के मौलिक आदेशों-उपदेशों का प्रसंगबद्ध वर्णन होने से स्वाध्यायशील महानुभावों के लिए परम उपयोगी।
मूल्य : 600/- 500/-
प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह